वर्ष : २१ अङ्क : ११ फरवरी १९९८ ई०

जैन भवन

तित्थयर

Received
३३८

सूची

प्राकृत व्याकरण प्रवेशिका डॉ० सत्यरंजन बनर्जी	३१५
श्रावक जीवन आचार्य श्री विजयभद्रगुप्त सूरीश्वरजी महाराज	३२४
राजा सम्प्रति	३२८
जिनागमों की मूल भाषा पर द्विदिवसीय विद्वत् संगोष्ठी	३३३

●

प्रकाशक

जैन भवन

पी-२५, कलाकार स्ट्रीट,

कलकत्ता-७०००७

दूरभाष : २३८२६५५

●

मुद्रक

अनुप्रिया प्रिन्टर्स

६ ए, बड़ौदा ठाकुर लेन,

कलकत्ता-७

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्र

वर्ष २१ : अंक ११

फरवरी १९९८

●

संपादन

राजकुमारी बेगानी

लता बोथरा

●

आजीवन	:	एक हजार रुपये
वार्षिक शुल्क	:	पचपन रुपये
प्रस्तुत अंक	:	पाँच रुपये

●

Foreign Subscription :

	U. S. $
Life Membership	$ 160.00
Yearly Subscription	$ 20.00
Per Issue	$ 2.00

(including Postages)

3755

OUR CUSTOMERS ARE OUR MASTERS

You can safely choose Oodlabari Tea for finest CTC teas, flavoury leaf teas and health giving Green Teas at reasonable prices. You can also phone at our Office for any assistance in selection of teas.

Insist on purchasing following packets ·

GREAT REFRESHER

OODLABARI

Royal

Fine Strong CTC Leaf Tea with Rich Taste

PACKED BY

THE OODLABARI COMPANY LTD.

NILHAT HOUSE, 11, R.N. MUKHERJEE ROAD

CALCUTTA-700 001

OODLABARI

Anyone desirous of taking dealership for our teas may kindly contact at following address :

THE OODLABARI COMPANY LIMITED

NILHAT HOUSE, 6TH FLOOR

11 R. N. MUKHERJEE ROAD, CALCUTTA 700 001

Calcutta office Phone : 248-1101, 248-9594, 248 9515

प्राकृत व्याकरण प्रवेशिका

डॉ० सत्यरंजन बनर्जी

पूर्वानुवृत्ति

तद्-तं नपुंसकलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	तं	ताइ, ताइं, ताणि
द्वितीया	तं	ताइ, ताइं, ताणि

तृतीया से सप्तमी तक शेष रूप पुंलिग के समान

इदम्-इम पुंलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	इमो	इमे
द्वितीया	इमं	इमे
तृतीया	इमेण, इमिणा	इमेहि-हिं-हिँ
चतुर्थी	×	×
पंचमी	इमाओ, इमाउ, इमाहि	इमाहिंतो, इमासुंतो
षष्ठी	इमस्स, अस्स	इमाण-णं, मेसि
सप्तमी	इमस्सि, इमम्मि, अस्सि	इमेसु-सुं
सम्बोधन	×	×

इदम्-इमा स्त्रीलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	इमा	इमा, इमाओ, इमाउ
द्वितीया	इमं	इमा, इमाओ, इमाउ
तृतीया	इमाइ, इमाए	इमाहि-हिं
चतुर्थी	×	×
पंचमी	इमाअ, इमाइ, इमाए इमत्तो इमाओ, इमाउ, इमाहिंतो	इमत्तो, इमाओ, इलाउ, इमाहिंतो-सुंतो

षष्ठी	इमाअ, इमाइ, इमाए	इमाण-णं
सप्तमी	इमाअ-इ-ए	इमासु-सुं
संबोधन	×	×

इदम्-इयं नपुंसकलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
एकवचन	इअं, इणं, इणमो	इमाइ, इमाइं, इमाणि
बहुवचन	इअं, इणं इणओ	इमाइ-इं-णि

एतद्-एअ पुंलिग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एस, एसो	एए
द्वितीया	एअं	एए
तृतीया	एएण, एइणा	एएहि, एएहिं, एएहिँ
चतुर्थी	×	×
पंचमी	एत्तो, एआओ, एआउ एआहि	एआहिंतो, एआसुंतो
षष्ठी	एअस्स	एआण-णं, एएसिं,
सप्तमी	एअस्सि, एअम्मि, एत्थ, इत्थ	एएसु-सुं
सम्बोधन	×	×

एतद्-एआ स्त्रीलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एसा	एआओ, एआउ
द्वितीया	एअं	एआओ, एआउ
तृतीया	एआए	एआहि-हिं-हिँ
चतुर्थी	×	×
पंचमी	एआअ, एआइ, एआए, एअत्तो एआओ, एओउ, एआहिंतो	एअत्तो, एआओ, एआउ एआहिंतो,-सुंतो
षष्ठी	एआअ, एआइ, एआए,	एआण-णं
सप्तमी	एआअ, एआइ, एआए	एआसु-सुं
सम्बोधन	×	×

एतद्-एअं नपुंसकलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एअं	एआइ, एआइं, एआणि
द्वितीया	एअं	एआइ, एआइं, एआणि

तृतीया से सप्तमी तक शेष रूप पुंलिगवत्

अदस्-अमु पुंलिंग

विभक्ति	एक-वचन	बहुवचन
प्रथमा	अमू, अह	अमूओ, अमुणो
द्वितीया	अमुं	अमू, अमुणो
तृतीया	अमुणो	अमूहिं, अमूहिँ
चतुर्थी	×	×
पंचमी	अमूओ, अमूउ, अमूहि	अमूहिंतो, अमूसुंतो
षष्ठी	अमुणो, अमुस्स	अमूण-णं
सप्तमी	अमुस्सिं, अमुम्मि, अमुत्थ	अमूसु-सुं
सम्बोधन	×	×

अदस्-अमु स्त्रीलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अमू अह	अमू, अमूओ, अमूउ
द्वितीया	अमुं	अमू, अमूओ, अमूउ
तृतीया	अमूए अमूइ, अमूअ, अमूआ	अमूहि, अमूहिं
चतुर्थी	×	×
पंचमी	अमूओ, अमूउ, अमूहि	अमूहिंतो, अमूसुंतो
षष्ठी	अमूए, अमूइ, अमूअ, अमूआ	अमूण, अमूणं
सप्तमी	अमूए, अमूइ, अमूअ, अमूआ	अमूसु, अमूसुं
सम्बोधन	×	×

अदस्-अमु नपुंसकलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अमुं, अह	अमूइ, अमूइं अमूणि
द्वितीया	अमुं	अमूइ, अमूणि

तृतीया से सप्तमी तक शेषरूप पुंलिगवत् ।

यद्-ज पुलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	जो, जे	जे
द्वितीया	जं	जे जा
तृतीया	जेण, जेणं	जेहि, जेहिं, जेहिँ
चतुर्थी	—	—
पंचमी	जम्हा, जाओ, जाउ	जाओ जाउ, जाहि, जेहि, जाहिन्तो, जासुंतो, जेसुंतो
षष्ठी	जस्स, जास,	जेसिं, जाण, जाणं
सप्तमी	जंसि, जस्सि, जहिं, जम्मि, जत्थ	जेसु, जेसुं, जाहे, जाला, जइआ
सम्बोधन	—	—

यद्-जा स्त्रीलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	जा	जा, जाओ, जाउ
द्वितीया	जं	जा, जाओ, जाउ
तृतीया	जाअ, जाइ, जाए	जाहि-हिं-हिँ
चतुर्थी	—	—
पंचमी	जाअ, जाइ, जाए, जत्तो, जाओ, जाउ, जाहिंतो	जत्तो, जाओ, जाउ, जाहिंतो-सुंतो
षष्ठी	जाअ, जाइ जाए	जाण-णं
सप्तमी	जाअ, जाइ, जाए	जासु-सुं
सम्बोधन	—	—

यद्-ज नपुंसकलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	जं	जाणि, जाइं, जाइँ
द्वितीया	जं	जाणि, जाइं, जाइ

शेष सभी रूप पुलिंग "ज" के समान चलते हैं।

किम्-क पुलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	को	के
द्वितीया	कं	के
तृतीया	केण, किणा	केहि, केहिं
चतुर्थी	—	—
पंचमी	कओ, कत्तो	कहिंतो, कासुंतो
षष्ठी	कस्स, कास	काण, काणं, केसिं
सप्तमी	कस्सिं, कम्मि, कत्थ, कहिं, कस्सि	केसु, केसुं
सम्बोधन	—	—

किम्-का स्त्रीलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	काओ, काउ, कीओ, कीउ
द्वितीया	कं	काओ, काउ, कीओ, कीउ
तृतीया	काए, काइ, कीए, कीअ, कीआ	काहि, कीहिं, कीहिं, कीहिं
चतुर्थी	—	—
पंचमी	काओ, काउ, कीओ, कीउ कीण	काहिंतो, कासुंतो, कीहिंतो, कीसुंतो
षष्ठी	कस्सा, किस्सा, कासे, कीसे कीइ, कीअ, कीआ, काइ, काए	कासां, केसिं, कासिं, काणं काण, कीणे, कीण
सप्तमी	काए, काइ, कीए, कीइ, कीआ कीअ, काहे, कइआ	कासु-सुं, कीसु-सुं
सम्बोधन	—	—

किम्-किं नपुंसकलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	कं	काइ, काइं, काणि
द्वितीया	कं	काइ, काइं, काणि

तृतीया से सप्तमी तक शेष रूप पुलिंगवत् ।

सर्व-सव्व पुलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सव्वो	सव्वे
द्वितीया	सव्वं	सव्वे, सव्वा
तृतीया	सव्वेण-णं	सव्वेहि-हिं-हिँ
चतुर्थी	—	—
पंचमी	सव्वत्तो, सव्वओ, सव्वाउ, सव्वाहि, सव्वम्हा, सव्वाहितो सव्वेहितो	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहि, सव्वेहि, सव्वाहितो सव्वेहितो, सव्वासुंतो, सव्वेसुंतो
षष्ठी	सव्वस्त	सव्वेसिं, सव्वाण-णं
सप्तमी	सव्वस्सिं, सव्वम्मि, सव्वहिं, सव्वत्थ	सव्वेसु-सुं
सम्बोधन	—	—

सर्व-सव्वा स्त्रीलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सव्वा	सव्वा, सव्वाओ, सव्वाउ
द्वितीया	सव्वं	सव्वा, सव्वाओ, सव्वाउ
तृतीया	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए	सव्वाहि-हिं-हिँ
चतुर्थी	—	—
पंचमी	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए, सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहितो	सव्वतो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहितो-सुंतो
षष्ठी	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए	सव्वाण-णं
सप्तमी	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए	सव्वासु-सुं
सम्बोधन	—	—

सर्व-सव्व नपुंसकलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सव्वं	सव्वाणि, सव्वाइं सव्वाइँ
द्वितीया	सव्वं	सव्वाणि, सव्वाइ, सव्वाइँ

शेष रूप पुलिंग "सव्व" शब्द की भांति ही चलते हैं।

पाठ दो

क्रिया

प्राकृत में क्रिया के विषय में कुछ विशेषताएँ हैं। जैसे १. धातु, २. पुरुष ३. वचन, ४. वाच्य (परस्मैपद और आत्मनेपद) ५. क्रिया के भाव, ६. काल (वर्तमान, अतीत और भविष्यत्) ७. अ-आगम, ८. अभ्यास (द्वित्व), ९. विकरण, १०. क्रिया की भूमि ११. क्रिया-विभक्ति (तिङ् विभक्ति), १२. क्रिया का रूप।

इनके अतिरिक्त भी तुमुन् प्रत्यय है, शतृ और शानच् प्रत्ययान्त शब्द और असमापिका क्रिया भी है।

इसके अलावा क्रिया में और भी विषय है जिसको हम अलग ढंग से बनाते हैं। वह है कर्मवाच्य, णिजन्त क्रिया, नाम-धातु, सन्नन्त धातु और यङन्त धातु। कुल मिलाकर के क्रिया में केवल इसी विषय में हमलोग ध्यान देते हैं।

किन्तु उपर्युक्त जो विषय हमने बतलाये हैं वे सभी प्राकृत में नहीं होते हैं। प्राकृत में उपर्युक्त विषय इतने सरल हो गये हैं कि एक विषय का भाव दूसरे विषय के द्वारा भी प्रकट हो सकता है। हम इन विषयों पर क्रमशः प्रकाश डालेंगे—

१. धातुः—धातु साधारणतया एक स्वर की होती है। जैसे कर्, हस्, मन् इत्यादि। किन्तु प्राकृत में अन्तिम हलन्त वर्ण नहीं होता है, इसलिए धातु के साथ स्वर (अ) योग करना चाहिए। इसलिए कर् धातु को हमलोग कर रूप से पढ़ते हैं और इसी के साथ क्रिया विभक्ति का योग होता है। अर्थात् कर इ = प्राकृत में करइ।

प्राकृत में कोई धातु द्वि-स्वर युक्त भी हो सकती है। जैसे पेक्ख इसका रूप पेक्खइ होता है। इस तरह देखइ, पासइ इत्यादि।

प्राकृत में ऐसा देखा जाता है कि उपसर्ग के साथ जब धातु का योग होता है तब उपसर्ग सहित धातु बन जाती है। जैसे प-इक्ख इससे पेक्ख धातु होती है।

२. पुरुषः—संस्कृत के अनुसार प्राकृत में भी तीन पुरुष हैं—
उत्तम, मध्यम एवं प्रथम।

३. वचनः—प्राकृत में दो वचन है—१. एकवचन और २. बहुवचन। द्विवचन के भाव को व्यक्त करने के लिये बहुवचन का प्रयोग होता है।

४. वाच्य (परस्मैपद एवं आत्मनेपद) —संस्कृत में जैसे वाच्य का परस्मैपद एवं आत्मनेपद होता है प्राकृत में ऐसा नहीं होता है। प्राकृत में केवल मुख्यतः परस्मैपद होता है। इसलिए प्राकृत में वाच्य केवल परस्मैपद ही है। कर्म-वाच्य में भी परस्मैपदीय विभक्ति का योग होता है। किन्तु कभी-कभी आत्मनेपदीय विभक्ति का योग होता है। इसलिए रमइ और रमए-इन दोनों का प्रयोग मिलता है। आत्मनेपद का प्रयोग अधिकांशतः अर्धमागधी में होता है। कभी-कभी महाराष्ट्री प्राकृत काव्य में होता है। कभी-कभी महाराष्ट्री प्राकृत काव्य में भी आत्मनेपद का प्रयोग देखा जाता है। वास्तव में उन स्थलों पर संस्कृत का प्रभाव देखा जाता है। कभी-कभी संस्कृत में अगर धातु आत्मनेपद है तो उसी के प्रभाव के अनुसार प्राकृत में भी आत्मनेपद का प्रयोग होता है। किन्तु प्राकृत भाषा के अनुसार सभी स्थलों पर परस्मैपद विभक्ति होनी चाहिए। इसलिए जब कर्मवाच्य में क्रिया-विभक्ति की आवश्यकता होती है तब भी परस्मैपद विभक्ति होती है।

५. क्रिया के भाव :—क्रिया के भाव का अर्थ है कि किस तरह से क्रिया निर्देशित होती है अर्थात् क्रिया प्रयोग से कैसे ज्ञात होता है कि क्रिया सामान्य रूप से किसी कार्य के अर्थ का प्रकाशन करती है, अथवा अपना आदेश एवं उपदेश देती है और उचित तथा अनुचित इस भाव को प्रकट करती है वह क्रिया का भाव कहलाता है। इस तरह से क्रिया का भाव कहलाता है। इस तरह से क्रिया का भाव सात प्रकार का है—१. निर्देशक, २. इच्छार्थक, ३. विध्यर्थक ४. अनुज्ञा-ज्ञापक, ५. क्रियातिपति, ६. आशीर्ज्ञापक, ७. अडागमनिषेधज्ञापक।

प्राकृत में इच्छार्थक, आशीर्ज्ञापक और अडागमनिषेधज्ञापक क्रिया के भाव नहीं होते हैं। इसलिए इसी प्राकृत में नहीं मिलता है।

प्राकृत में केवल निर्देशक, विध्यर्थक, अनुज्ञाज्ञापक और क्रियातिपत्ति का प्रयोग होता है। इसलिये प्राकृत में केवल चार प्रकार धातु सा होता है।

६. काल :—प्राकृत में तीन काल हैं :—भूत, वर्तमान और भविष्यत्। *संस्कृत में जो लङ् लुङ् और लिट् है उसका प्रयोग प्राकृत में नहीं होता है। प्राकृत में इन तीनों का प्रयोग केवल एक रूप से प्रकट होता है। इसलिए संस्कृत* के ज्ञान से प्राकृत में क्रिया का रूप नहीं कर सकते हैं।

कभी-कभी अर्धमागधी में लङ् और लुङ् का प्रयोग देखा जाता है। जैसे देविंदो इणं अब्बवी।

७. अ-आगम:—संस्कृत में अ-आगम लङ्, लुङ् और लृङ् में होता है। यह अ-कार अतीत-काल का ज्ञापक है। लङ् और लुङ् प्राकृत में नहीं होता है इसलिये प्राकृत में अं-आगम भी नहीं होता है। क्रियातिपत्ति अर्थात् लृङ् प्राकृत में होता है। लेकिन इसका प्रयोग अ के योग में नहीं होता है। इसलिए प्राकृत में अ-आगम का प्रयोग नहीं होता है।

८. अभ्यास (द्वित्व) :—प्राकृत में अभ्यास का प्रयोग नहीं होता है। इसलिए प्राकृत में अभ्यास नहीं होता है। संस्कृत में अभ्यास केवल जुहोत्यादिगण में, लिट् के रूप में, सन्नन्त के रूप में और यङन्त के रूप में मिलता है। प्राकृत में ये सभी विषय दूसरे ढंग से घटित होते हैं। इसलिये प्राकृत में भी अभ्यास नहीं होता है।

अभ्यास का अर्थ धातु को द्वित्व बनाना। जैसे गम् धातु को लिट्-लकार के प्रयोग में धातु का अभ्यास होता है। अर्थात् गम् गम् होता है। इससे जगाम बनता है। यह जो गम् धातु का द्वित्व है वही अभ्यास कहलाता है। प्राकृत में इसका प्रयोग नहीं है। इसलिये प्राकृत में अभ्यास नहीं है।

९. विकरण :—प्राकृत में दो विकरण है—अ और ए। सभी रूप अकारान्त और एकारान्त से ही होते हैं। जैसे करइ, करेइ, हसइ हसेइ, गमइ गमेइ इत्यादि।

संस्कृत में जो १० गण है उन सभी का प्राकृत में दो गणों में विभाजन होता है। किन्तु जब संस्कृत से हम लोग प्राकृत में सीधा रूपान्तरण करते हैं तब संस्कृत के गण का रूप प्राकृत में मिल सकता है। जैसे श्रृणोति प्राकृत में सुणोइ हो सकता है और सुणइ तो होगा हो। प्रायः इस तरह की धातु के गण का रूप प्राकृत में मिलता है।

१०. क्रिया की भूमि :—प्राकृत में अन्तिम हलन्त व्यन्जन नहीं होता है। इसलिये प्राकृत में कोई हलन्त व्यन्जनान्त धातु भी नहीं होता है। अर्थात् इस धातु अ विकरण से हस रूप बन जाता है। इसलिए हस प्राकृत में क्रिया की भूमि कहलाती है। इसी के साथ तिङ् विभक्ति का योग होता है। अर्थात् हस् अ-इ = हस-इ = हसइ। क्रिया का रूप समझाने के लिये क्रिया की भूमि के ज्ञान की आवश्यकता है।

११. क्रिया विभक्ति (तिङ् विभवित) :—प्राकृत में क्रिया के काल और क्रिया के भाव प्रकट करने के लिए तिङ् विभक्ति होती है। वह विभवित संस्कृत से भिन्न है। उपर्युक्त क्रिया का काल एवं क्रिया का भाव संस्कृत से अलग है।

१२. क्रिया का रूप:—प्राकृत में उपर्युक्त क्रिया के तीन कालों एवं पांच लकारों का रूप मिलता है।

श्रावक जीवन (१३)

आचार्य श्री विजयभद्रगुप्त सूरीश्वरजी महाराज

पूर्वानुवृत्ति

२. वेश्यागमन नहीं करना चाहिये

अणुव्रत लेने के बाद, स्वस्त्री में संभोग की तीव्र इच्छा पूर्ण नहीं होने पर अथवा स्वपत्नी संभोग के लिये अनुकूल नहीं होने पर, पुरुष सोचे कि 'मेरा व्रत 'परस्त्रीपरिहार' का है, वेश्या परस्त्री नहीं है, यानी वह किसी की पत्नी नहीं है, उसके साथ संभोग करने से मेरा व्रत टूटेगा नहीं और वासना-तृप्ति भी हो जायेगी। पैसा देकर अल्प समय के लिये उसको मैं स्व-स्त्री बना लूंगा···बस, मेरा काम हो जायेगा!' और यदि वह पुरुष वेश्यागमन करता है तो उसका अणुव्रत कलुषित हो जाता है।

'इत्वरपरिगृहिता' का अर्थ है वेश्या। पैसा देकर अल्प समय के लिये जिसका ग्रहण किया जाता है। 'स्व-स्त्री' की कल्पना कर और 'यह स्त्री किसी की बीबी नहीं है इसलिये पर-स्त्री नहीं है,' ऐसी कल्पना कर उस वेश्या के साथ संभोग करने से, भले व्यवहार से व्रतभंग नहीं होता है परन्तु भाव की अपेक्षा से व्रतभंग ही है। मात्र 'मेरा व्रत भंग न हो' इतनी व्रत सापेक्षता ही उसके व्रत का रक्षण करती हैं, अन्यथा व्रतभंग ही है यह।

३. अपरिगृहिता स्त्री भी त्याज्य है

तीसरा अतिचार दूसरे अतिचार से मिलता-जुलता है। अपरिगृहिता स्त्री वेश्या भी हो सकती है। जब उस वेश्या को किसी ने पैसे देकर न लिया हो, तब भी वह 'अपरिगृहिता' कहलायेगी। वैसे, कोई अनाथ स्त्री है वह भी अपरिगृहिता कहलायेगी। विधवा स्त्री भी अपरिगृहिता कहलायेगी, यदि वह किसी दूसरे पुरुष से वचनबद्ध न हुई हो तो। ऐसी स्त्री के साथ 'यह पर-स्त्री नहीं है और पैसे देकर मैंने उसको मेरी स्त्री बना दी है,' ऐसी कल्पना कर, जो संभोग करता है, वह अपने अणुव्रत को दूषित करता है। वास्तव में देखा जाय तो व्रतभंग ही है। व्रत का भाव कहां रहता है? इन्द्रियसंयम कहां रहता है? बस, थोड़ी सी व्रतसापेक्षता रहने से 'अतिचार' कहा है। परन्तु 'इस प्रकार वेश्या से, विधवा से, कुंवारी कन्या से या अनाथ स्त्री के साथ संभोग करने से

व्रतभंग नहीं होता है, मात्र अतिचार ही लगता है,' ऐसा सोचकर व्यभिचार के मार्ग पर मत चलना। ऐसी गल्ती नहीं करना। अन्यथा सदाचार की भावना, ब्रह्मचर्य की भावना नष्ट हो जायेगी। अणुव्रतों का कोई अर्थ नहीं रहेगा।

जिसके साथ शादी की है, उसको छोड़कर और किसी भी स्त्री के साथ संभोग नहीं करने का संकल्प करें, दृढ़ निश्चय करें।

प्रश्न : पत्नी अनुकूल न हो, पत्नी के साथ बोल-चाल भी बन्द हो तब क्या करना ?

महाराजश्री : तब ब्रह्मचर्य का पालन करना ! मन नहीं मानता हो तो उपाश्रय में आकर सो जाना ! भोजन नहीं मिले तो उपवास किया जा सकता है, परन्तु जहर नहीं खाया जाता है ! परस्त्री, वेश्या, विधवा, वगैरह जहर के बराबर है। स्वस्त्री से संभोग सुख नहीं मिलता है तब मन को संयम में रखना चाहिये।

इसलिये आप लोगों को बार-बार कहता हूँ कि पति-पत्नी के सम्बन्ध अच्छे बनाये रखने चाहिये। दोनों के बीच अच्छे सम्बन्ध बने रहने से पुरुष का मन दूसरी स्त्रियों के प्रति नहीं जायेगा और स्त्री का मन दूसरे पुरुषों के प्रति आकर्षित नहीं होगा।

पति-पत्नी के सम्बन्ध को बरकरार रखने के लिये, घनिष्ठ बनाये रखने के लिए वर्तमानकालीन पश्चिम के मनोवैज्ञानिकों के कुछ महत्वपूर्ण मंतव्य जानने योग्य हैं।

दांपत्य जीवन के विषय में मनोवैज्ञानिकों के महत्वपूर्ण मंतव्य

१. हास्य-विनोद वैवाहिक जीवन में उत्साह और उमंग तो बनाए रखता ही है, साथ-साथ नीरस दुनियादारी को झेलने की शक्ति भी देता है। इससे जीवनसाथी एक दूसरे को आहत किये बिना अपनी इच्छाओं और आलोचनाओं को भी व्यक्त कर सकते हैं।

२. पारिवारिक उत्तरदायित्वों से पहले जिन क्रीड़ाओं में आप को मजा आता था, उन्हें न छोड़ें। रोजमर्रा की जिन्दगी के अधिक खुशगवार पहलुओं को सोचने का प्रयास करें। एक दूसरे की प्रशंसा करके सकारात्मक ढंग से दूसरे की हिम्मत बढ़ाने से आप कार्य की शुरुआत करें।

३. २,७८७ लोगों के सर्वेक्षण के अनुसार, दांपत्य जीवन के सबसे महत्वपूर्ण तत्व हैं साहचर्य और घनिष्ठता। और, यौन (सेक्स) घनिष्ठता की भाषा है, इसलिए बुद्धिमान पत्नी अपने वैवाहिक जीवन की मानसिक समीक्षा करते समय इन तथ्यों को अवश्य शामिल करेगी। क्या वह और

उसका पति सेक्स के बारे में बात करने से कतराते हैं ? क्या वे असंतुष्टियों को लेकर चुप रहते हैं ? यही तत्त्व परेशानी को दावत देता है । यौन समस्याओं को झेलते जाने का कोई अर्थ नहीं है ।

४. वैवाहिक संतुष्टि छठवें और सातवें सालों में अपने निम्नतम स्तर पर होती है । यह लगभग वह समय है जब पहला बच्चा स्कूल जाना शुरू ही करता है । इस अवधि के दौरान व्यावसायिक दबाव और बच्चे के पालन पोषण में गहन व्यस्तता के कारण दोनों के बीच घनिष्ठता और साहचर्य में कमी आती है ।

५. अक्लमंदी इसी में है कि झगड़ों को जितनी जल्दी हो सके, शांत करें और जीतने का नहीं बल्कि दोनों अपने जीवनसाथियों को संतुष्ट करने का प्रयास करें। इस विषय में कुछ नियम निम्नलिखित हैं—

१. स्पष्ट कहिए । सम्बन्ध जिनसे सुधर सकते हैं, उन स्पष्ट बदलावों की बात कीजिए ।
२. शिकायतों को सुनिए और उनका स्पष्टीकरण करने का प्रयास कीजिए । शिकायत के बदले में शिकायत मत कीजिए ।
३. वर्तमान में रहिए । विगत का रोना मत रोइए ।
४. एक विषय पर रहिए । यदि एक से अधिक विवाद उठ खड़े होते हैं तो उन्हें लिख डालिए और बाद में उन पर बातचीत कीजिए ।
५. अपनी बात प्रत्यक्ष व्यवहार तक ही सीमित रखिए, उसका विश्लेषण मत करने लगिए ।
६. एकान्त में लड़िए ! दूसरों के सामने नहीं । विचार-विमर्श उस समय के लिये स्थगित कीजिए जब आप शांत हों और क्रोध से पागल न हों ।
७. तलाक का नाम मत लीजिए । जिन नाराजियों का हल निकल सकता है उनके कारण सम्बध-विच्छेद की धमकी वैवाहिक सम्बन्ध को ओछा ही बनाती है ।

पति-पत्नी के सम्बन्ध अच्छे बने रहते हैं तो चौथे अणुव्रत का पालन सरलता से हो सकता है, अन्यथा अणुव्रत दूषित बन सकता है अथवा भंग हो सकता है । अब चौथे अतिचार के विषय में बताते हैं ।

४. अनंग क्रीड़ा से बचते रहो

पहले 'अनंग' का अर्थ सुन लो । अंग यानी शरीर का अवयव । मैथुन-संभोग की अपेक्षा से स्त्री की योनि और पुरुष का मेहन अंग कहा जाता है । योनि और मेहन के अलावा स्त्री-पुरुष के सभी अंग 'अनंग' कहे जाते हैं ।

मुंह, सीना, कपोल....वगैरह अनंगों के साथ स्त्री-पुरुष की क्रीड़ा 'अनंगक्रीड़ा' कही जाती है।

अथवा अनंग का दूसरा अर्थ है काम। काम-वासना से प्रेरित हो कर अनंगक्रीड़ा न करें। वास्तव में यह व्रतभंग ही है, फिर भी 'मैंने तो परस्त्री के साथ सम्भोग नहीं करने की प्रतिज्ञा की है, यह तो मात्र अनंगक्रीड़ा की है,' ऐसा सोचता है इसलिए व्रतसापेक्षता रहती है। इस अपेक्षा से अतिचार कहा गया है।

अब पांचवां अतिचार बताता हूँ—

५. संभोग की तीव्र इच्छा नहीं करें

स्व-पत्नी के साथ भी संभोग की मर्यादा रखनी चाहिये। संभोग की तीव्र इच्छा से बचना चाहिये। तीव्र इच्छा मन को तो नुकसान करती ही है, शरीर पर भी उसका बुरा प्रभाव पड़ता है। मनोयोग बिगड़ जाने से दूसरे महत्वपूर्ण कार्य छूट जाते हैं। तीव्र कामुकता शरीर में अनेक रोग पैदा करती है। पापकर्म के बन्धन तो होते ही रहते हैं।

संभोग की तीव्र इच्छा से, कभी अनिच्छा से भी पत्नी को वश होना पड़ता है। इससे कभी झगड़ा हो जाता है। आपस में कटुता बढ़ती है, और सम्भवतः पुरुष वेश्या अथवा परस्त्री की ओर मुड़ जाता है। इसलिए संभोग की इच्छा को तीव्र नहीं होने देनी चाहिए।

इस प्रकार स्व-पत्नी संतोष और परस्त्रीपरिहार रूप चौथा अणुव्रत बताया गया है। हर दृष्टि से यह अणुव्रत उपयोगी, उपकारी और उपादेय है। इन्द्रियसंयम, मनःसंयम और आत्मसंयम से ही इस अणुव्रत का पालन सम्भव है। इस अणुव्रत को ग्रहणकर, अच्छा पालन कर आत्मा को निर्मल करते रहें— यही मंगल कामना है। ●

राजा-सम्प्रति

पूर्वानुवृत्ति

तेरहवाँ परिच्छेद

स्वार्थ के मोह में

वह कृष्णमुखी श्यामा जिस प्रकार तिष्यरक्षिता की प्रिय सखी बन रही थी, उसी प्रकार बौद्ध साधु नन्दनाचार्य ने भी उसे साध रखा था। वही समय-समय पर जाकर तिष्यरक्षिता के सब समाचार उन्हें बतलाती रहती थी। साथ ही राजा और रानी पर देख-रेख रखने का भार भी साधु ने उसी पर छोड़ रखा था। तिष्यरक्षिता ने अवन्तिका के पत्र में जो गड़बड़ कर दी थी, उसका पता भी श्यामा को लग चुका था, अतएव उसने यह समाचार भी साधु को बतला दिया था। अतः तिष्यरक्षिता को दबाने के लिये यह एक अमूल्य साधन हाथ लग जाने से उसे परम सन्तोष था।

उधर नन्दनाचार्य तिष्यरक्षिता के सौन्दर्य पर मुग्ध हो रहा था और इस प्रकार वह उस युग की रूपगर्विता सम्राट अशोक की पटरानी के यौवन का पुजारी बन गया था। वह उस उपद्रव-कारिणी एवं राजमद से गर्वीली सुन्दरी को कैसे अपने शिकञ्जे में फँसाया जाय, इसके लिए मौके की ताक में था। अतएव श्यामा को साध लेने से अनायास ही उस गर्वीली युवती का मान मर्दन करने का यह एक मौका हाथ लग गया। वह केवल समय की ही प्रतीक्षा कर रहा था कि, वह पत्र अवन्ती में पहुँचने के बाद क्या परिवर्तन होता है? किन्तु इतने पर भी उस परिवर्तन से पूर्व तिष्यरक्षिता के कार्य से अनजान की तरह उस बौद्धगुरु ने उससे मिलकर कुछ आत्मश्लाधापूर्वक अपनी प्रशंसा करवाने की इच्छा की! "लगा तो तीर, नहीं तो तुक्का है ही" वाली उक्ति के अनुसार वह इस अवसर को व्यर्थ नहीं जाने देना चाहता था। इसलिए एक दिन मौका पाकर उसने श्यामा के द्वारा तिष्यरक्षिता को दर्शन के लिए बुलवाया।

तिष्यरक्षिता भी प्रसन्न थी और वह भी उस पत्र का अवन्तिका पहुँचने पर क्या परिणाम होता है? इसी की प्रतीक्षा कर रही थी। उसके इस पापकृत्य को उसकी सखी श्यामा के सिवाय कोई नहीं जानता था और श्यामा को भी उसने सख्त कह रखा था कि उस बात का भेद अपने दोनों के सिवाय तीसरा कोई न जान सके।

अवसर पाकर फिर तिष्यरक्षिता, श्यामा तथा सहेलियों के साथ गुरुदर्शन के लिए निकल पड़ी। उस समय संसार में श्रेष्ठ मानेजानेवाले नन्दनाचार्य के मठ में अनेक बौद्ध साधु रहते थे। उपगुप्त के लिए महाराज ने खास तौर पर यह भवन बनवाकर उसे अर्पण किया था। इसी कारण उसका वैभव एवं ठाठ-बाट विशेष आकर्षक प्रतीत होता था। उन महात्यागी उपगुप्त के स्थान पर इस समय नन्दनाचार्य बौद्ध अधिष्ठित था, किन्तु वह प्रपंची और विलासप्रिय था। साधु बनजाने पर भी उसकी वासनाएँ अभी ताजी ही बनी हुई थीं। इसीलिए वह बौद्धधर्म के पर्दे की आड़ में सम्राट् को फँसाकर उचित लाभ उठाने के लिये समय की प्रतीक्षा कर रहा था। वह मध्याह्न के पश्चात बन ठन कर अपने शिष्य को अध्ययन करा रहा था कि इतने ही में एक शिष्य ने दौड़ते हुए आकर खबर दी :—"पटरानी तिष्यरक्षिता आप श्रीमान् के दर्शनार्थ आ रही हैं।"

तिष्यरक्षिता का नाम सुनते ही नन्दनाचार्य के कान खड़े हो गये। उसने चलता हुआ पाठ दूसरे विद्वान शिष्य को सौंपकर कहा कि मेरे वापस आने तक इसे चलाते रहो। इसके बाद वह एक बड़े और सुन्दर कमरे में जाकर इस प्रकार बैठ गया मानो किसी गहन शास्त्र का अध्ययन कर रहा हो! साथ ही जब वह चित्तवृत्ति का निरोध करता, तब ऐसी आकृति बना लेता था मानो वह दर्शक के रूप में ही अवस्थान कर रहा है। इस प्रकार नन्दन संसार के बाहरी आनन्द में ही मस्त बना रहता था। उसके बाहरी दम्भ की कोई सीमा ही नहीं थी।

तिष्यरक्षिता रथ में से उतरकर श्यामा के साथ नन्दनाचार्य के पास आई, और इधर अन्य सखियाँ मठ की शोभा अवलोकन करने लगीं। इस प्रकार उसे नन्दनाचार्य से बातचीत करने के लिये अच्छा मौका मिल गया। नन्दनसाधु समाधि में से जागने का सा ढङ्ग बनाकर बोला; आइये, आइये! महारानीजी! पधारिये।"

"गुरुजी! आप प्रसन्न तो हैं न?" महारानी ने मुसकुराते हुए पूछा।

"हाँ, आपको देखकर तो विशेष रूप से!" साधु ने मिठास के साथ उत्तर दिया!

"गुरुवर! आज आप कुछ विशेष प्रसन्न दिखाई देते हैं?"

"हाँ आपका अनुमान ठीक है!"

"है कोई नवीन समाचार?"

"आपही के लाभ की बात है, महारानीजी! आपका कार्य मैंने सिद्ध कर दिया है! बुद्ध भगवान की कृपा से थोड़े ही दिनों में आप उसका परिणाम देख

लेंगी ! जब तक उस प्रयत्न का परिणाम ज्ञात नहीं होता; तब तक मैं उसी प्रयत्न में लगा हुआ हूँ।" नन्दन साधु ने डींग हाँकना शुरू किया।

"अहा ! आप मेरे कार्य की इतनी अधिक चिन्ता रखते हैं कि रातदिन उसी के लिए प्रयत्न में लगे रहते हैं !" रानी ने प्रसन्न होते हुए कहा।

"इसमें आश्चर्य जैसी बात ही क्या है ? आपका कार्य तो मुझे करना ही चाहिए ! क्या आप मुझे अपने से भिन्न समझती हैं ? भले ही आपके मन में चाहे जो हो, किन्तु हम पहले तो किसी का कन्धा पकड़ते नहीं, और यदि पकड़ते भी हैं तो उसे संसार-सागर से पार उतारने के लिये ही। तब, भला ऐसी छोटी सी बात की तो हमारे लिए गिनती ही क्या हो सकती है।"

"सत्य है ! आप जैसे समर्थ पुरुष के प्रभाव से मेरा कार्य अवश्य सिद्ध होगा ! मेरा महेंद्र भारत का सम्राट् बनेगा ! मेरी तो एक मात्र यही कामना है !" रानी ने सन्तोष प्रकट करते हुए कहा।'

"इसमें सन्देह जैसी बात ही क्या है ! मेरे प्रभाव से आपका काम हुआ ही समझिये ! मुझे तो यही जान पड़ता है कि थोड़े ही दिनों में आप अपने लाभ का नवीन समाचार सुन लेंगी !" साधु ने कहा।

"तब तो आपके मुँह में घी-शक्कर गुरुदेव।" महारानी ने मधुर मुसकान के साथ कहा !"

"बस, तो केवल घी-शक्कर दिखाकर ही आप प्रसन्न करना चाहती हैं ?" यों कहते हुए साधु भी मधुर हास्य के साथ मुसकुराया।

"तो मैं भला, आपको और क्या दे सकती हूँ ? फिर भी मुझसे जो कुछ हो सकेगा, वह अवश्य आपकी सेवा में प्रस्तुत करूँगी। कहिये और कुछ ?"

"ठीक है। आप जो न दे सके, ऐसी किसी वस्तु की याचना मैं नहीं करता कि, आकाश में से मुझे चाँद ला दीजिये अथवा अजरामर बनने के लिये अमृत का कलश ले आइये ! मैं जो कुछ माँगूँगा उसे आप यदि चाहें तो सुगमता से दे सकेंगी महारानी !" साधु ने गोलमाल बात कही !

"निःसन्देह मैं आपकी इच्छा अवश्य पूर्ण कर सकूँगी। एक बार आप मेरे लाभ का ही शुभ समाचार सुना दीजिए; जिससे कि मेरे हृदय को शान्ति प्राप्त हो सके।"

"अवश्य ! आप कुछ ही दिनों में वह समाचार सुन लेंगी, रानीजी ! मुझे तो समाधि में ऐसा प्रतीत होता है कि कार्य का आरम्भ भी आपसे किसी के द्वारा हो चुका है।" उसने ठण्डे दिल से कहा।

किन्तु नन्दन के वचन सुनकर तिष्यरक्षिता चौंकी। "ओह! प्रभु! आप तो त्रिकालज्ञानी हैं!"

"चुप! चुप! जरा धीरे से बोलिये! दीवार के भी कान होते हैं। स्मरण रखिये कि यह बात गुप्त रखने की है। आपकी श्यामा से भी मत कहिये।" भिक्षुक ने धीमे शब्दों में कहा।

"आपकी बात मेरे ध्यान में है! किन्तु क्या समाधि में यह सब दिखाई देता है ?

"हाँ; इसमें आश्चर्य ही क्या है ? ऐसी तो कई वस्तुएँ आत्म साक्षात्कार हो जाने पर अन्धकार में बिजली की चमक के समान प्रत्यक्ष दिखाई देती हैं। और यह तो हमारा नित्य का ही साधारण अभ्यास है। यही नहीं, हम तो इससे भी आगे बढ़ गये हैं। ये समाधि-योग की बातें हैं। इन्हें आप नहीं समझ सकेंगी। इसीलिये आगे की बातें विशेषरूप में कैसे कही जायें।"

तिष्यरक्षिता ने मन में विचार किया कि 'यदि यह साधु तुरन्त ही नाराज हो जाय या बिगड़ जाय तो निश्चित ही जड़-मूल से मिटा सकता है! अतएव इसे तो जैसे भी हो लालच में फँसाकर वशीभूत कर लेना ही उचित है। यह मुआ तो तीनों काल की बातें जानता है!"

"रानीजी! आप किस विचार में पड़ गईं सेवक से कोई अपराध तो नहीं हुआ ? यों कहते हुए साधु हँसा।

"अरे भगवन्! आप तो युग के साक्षात् सर्वज्ञ हैं! आपके अपराध की तो मेरे मन में कल्पना ही कैसे हो सकती है ? आपकी सर्वज्ञता ने मुझे मुग्ध कर लिया है। प्रभु, मैं आपकी क्या सेवा कर सकती हूँ ?"

"घबराइये मत, रानीजी! भक्ति अनेक प्रकार से हो सकती है। आपकी इच्छा होगी तो उस भक्ति को स्वीकार कर प्रथम लाभ मैं आपही को दे सकूँगा! कहिए, और क्या चाहती हैं ?"

"तब तो आपकी महान् कृपा ही होगी। प्रभु! हम जैसे संसारी जीवों पर तो आपकी कृपा दृष्टि ही रहनी चाहिए। आप हमें सदैव ही स्नेहभरी दृष्टि से देखें, यही प्रार्थना है।"

"यह तो ठीक है रानीजी! आप ही कहिये! क्या इस प्रकार की भक्ति सदैव ही हमारे प्रति रख सकेंगी ? तन मन और धन से आप हमारी सेवा कर सकेंगी ? काम बन जाने पर गरजरूरी और वैद्य वैरी बन पाता है।

"नहीं, भगवन् मैं ऐसी विश्वास घातिनी नहीं हूँ। प्रभु! मेरे मन की बात कैसे कहूँ? मैं तो आपको स्वयं महाराज से भी अधिक पूजनीय समझती हूँ। इससे अधिक क्या कह सकती हूँ?"

"आपके ये शब्द सत्यतापूर्ण हैं या बाहरी आडम्बर से भरे हुए हैं? किसी दिन मैं इसकी परीक्षा लूँगा। इसलिये जरा सोच समझकर ही बोलिये।" साधु ने मीठी हँसी के साथ कहा।

अवश्य! मैं खुशी से इसकी परीक्षा दूँगी, और यदि अब आप हमारे यहाँ आहार लेने पधारें तो बड़ी कृपा होगी। मैं श्यामा को बुलाने के लिए भेजूँगी। आपकी चरणरज से हमारा घर पवित्र होगा। हमारा जन्म सफल हो जायगा।"

"किन्तु आपको भी निरन्तर दर्शन के लिए आते ही रहना चाहिए। रानीजी! गुरु की भक्ति करने से स्त्रियाँ भव-सागर से पार हो सकती हैं, किन्तु उन्हें तन, मन, धन आदि अपना सर्वस्व गुरु को अर्पण कर देना पड़ता है। तभी आपकी मोक्ष हो सकती है।" इस प्रकार व्यंग्य ही व्यंग्य में साधु ने रानी को सब कुछ कह दिया। उसकी वृत्तियाँ तो उस समय इस प्रकार उछल रही थीं कि इसी क्षण वह अपने कार्य का मंगलाचरण कर दे, किन्तु शीघ्रता में किया कराया सब नष्ट हो जाने का भय था। इसीलिए उसने सोचा कि "उतावला सो बावला, धीरासो गम्भीर।"

"आपका यह उपदेश यथार्थ है भगवन्! आपकी कृपा से हमें सद्बुद्धि प्राप्त होती रहे, और आपके प्रति हमारी भक्ति अचल बनी रहे। ऐसी कृपा कीजिये!"

"तथास्तु" कहकर साधु ने वरदान दिया।

समय पूरा हो जाने से आसपास मठ के अवलोकनार्थ गई हुई सखियाँ आ पहुँची और असल बात की चर्चा वहीं रुक गई। सभी महिलाएँ थोड़ी देर वहाँ बैठकर गुरु का उपदेशामृत श्रवण कर जैसे आई थीं, वैसे ही वापस लौट गईं।●

जिनागमों की मूल भाषा पर
द्विदिवसीय विद्वत् संगोष्ठी

प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी, प्राकृत विद्यामण्डल और प्राकृत जैन विद्या विकास फंड नाम की तीन संस्थाओं के संयुक्त तत्त्वावधान में तथा जैनाचार्य श्री सूर्योदय सूरीश्वरजी और श्री शीलचन्द्रसूरिजी की पावन निश्रा में अहमदाबाद के सेठ हठीसिंह केसरीसिंह वाडी के भव्य जैन मन्दिर के परिसर में "जैन आगमों की मूल भाषा" सम्बन्धी एक विद्वत-संगोष्ठी दिनांक २७-२८ अप्रैल, १९९७ को आयोजित की गयी।

भगवान् महावीर ने अर्धमागधी भाषा में अपने धर्मोपदेश दिये थे और उनके आगम ग्रंथ भी मूलत: अर्धमागधी भाषा में ही रचे गये थे। यह तथ्य इतिहास और जैन आगमों में प्राप्त प्रमाणों से स्वत: सिद्ध है। भारतीय एवं जर्मन विद्वानों की डेढ़ सौ वर्षों की आधुनिक तरीके की संशोधन पद्धति से भी यह तथ्य सिद्ध हो चुका है और आज तक इस मुद्दे पर किसी प्रकार का विवाद या मतभेद उपस्थित नहीं हुआ।

परन्तु अभी अभी दो एक वर्षों से जैन धर्म की एक शाखा के मुनिवरों और विद्वानों द्वारा ऐसा मत प्रस्थापित करने का जोरदार प्रयत्न किया जा रहा है कि भगवान महावीर और उनके आगमों की भाषा अर्धमागधी प्राकृत नहीं परन्तु शौरसेनी प्राकृत थी।

इस नये अभिगम और मतभेद का प्रामाणिक मूल्यांकन तथा परीक्षण करना अत्यन्त अनिवार्य बन गया था। इसीलिए इस विद्वान् संगोष्ठी का आयोजन आचार्य श्री की प्रेरणा से करने में आया।

दो दिन की इस संगोष्ठी में स्थायी और भारत के विविध स्थलों से आगत विद्वानों के द्वारा १३ शोध-पत्र प्रस्तुत किये गये। इसमें विश्वविख्यात विद्वान जैसे कि पं० दलसुखभाई मालवणिया, डा० हरिवल्लभ भायाणी, डॉ० मधुसूदन ढांकी, डॉ० सागरमल जैन, डॉ० सत्यरंजन बनर्जी एवं डॉ० रामप्रकाश पोद्दार, डॉ० एन० एम० कंसारा, डॉ० के० रिषभचन्द्र, डॉ० रमणीक शाह, डॉ० भारती शैलत, डॉ० प्रेमसुमन जैन, डॉ० जितेन्द्र शाह, डॉ० दीनानाथ शर्मा एवं कु० शोभना शाह ने भाग लिया और इसके सिवाय अन्य चालीसेक विद्वानों ने संगोष्ठी की चर्चा में सक्रिय भाग लिया। तेरापंथ की समणी चिन्मय *प्रज्ञाजी श्री इस संगोष्ठी में भाग लेने के लिये लाडनूं से खास तौर पर* पधारी थीं।

संगोष्ठी की प्रथम बैठक दिनांक २७ को प्रात: सार्वजनिक सभा के रूप में हुई। इस समारोह में अतिथि विशेष के रूप में विख्यात श्वेताम्बर जैन समाज के अग्रणी सेठ श्री श्रेणिक भाई, कस्तूर भाई तथा अन्तरराष्ट्रीय पुस्तक प्रकाशक मोतीलाल बनारसीदास (दिल्ली) के श्री नरेन्द्रप्रकाश जैन उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त मुंबई से सेठ श्री प्रताप भाई भोगीलाल (दिल्ली की बी० एल० आई० आई संस्था वाले) भी उपस्थित रहे। समारोह का यशस्वी संचालन डॉ० कुमारपाल देसाई ने किया। इस सार्वजनिक समारोह में डॉ० के० आर० चन्द्र के द्वारा दस वर्ष के कठोर परिश्रम से भाषिक दृष्टि से पुन: सम्पादित "आचारांग—प्रथम अध्ययन" का विमोचन (लोकार्पण) पं० श्री दलसुख भाई मालवणिया के कर-कमलों द्वारा किया गया। इसके अतिरिक्त अन्य पांच ग्रन्थों का विमोचन भी विभिन्न महानुभावों के द्वारा किया गया।

उसी दिन दुपहर को संगोष्ठी की प्रथम बैठक हुई। इसकी अध्यक्षता बहुश्रुत इतिहासविद तथा स्थापत्यविद् डॉ० मधुसूदन ढांकी ने की। इस बैठक में चार विद्वानों ने अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किये। संगोष्ठी की विशेषता यह थी कि हरेक शोध-पत्र पढ़ने के बाद श्रोता-वर्ग और विद्वानों द्वारा उस पर तत्त्विक तथा मार्मिक चर्चा होती थी, प्रश्नोत्तरी की जाती थी सम्बन्धित वक्ता के द्वारा उसका उत्तर दिया जाता था और अन्त में अध्यक्षश्री उसका मधुर समापन करते थे। उसके बाद ही दूसरा शोध-पत्र पढ़ा जाता था। इस कारण संगोष्ठी का वातावरण रसप्रद् जीवन्त और तार्किक बन पड़ा।

दिनांक २८ अप्रैल को दूसरे दिन प्रात: संगोष्ठी की द्वितीय बैठक हुई जिसकी अध्यक्षता सुविख्यात भाषा-शास्त्री डॉ० सत्यरंजन बनर्जी (कलकत्ता) ने की। इस बैठक में पांच शोध-पत्र प्रस्तुत किये गये जिसमें डॉ० सागरमल जैन डॉ० पोद्दार, डॉ० बनर्जी आदि के वक्तव्य विशेष ध्यान आकर्षित करने वाले और मौलिक संशोधन-युक्त थे।

उसी दिन की दुपहर की अन्तिम (तीसरी) बैठक की अध्यक्षता डॉ० सागरमल जैन (बनारस) ने की जो जैन विद्या और भारतीय संस्कृति के गहन अभ्यासी है। उन्होंने इस बैठक का सुन्दर संचालन किया। इस बैठक में इस संगोष्ठी के पुरोधा डॉ० के० आर० चन्द्र सहित चार विद्वानों ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये।

इस संगोष्ठी में श्वेताम्बर मूर्तिपूजक, स्थानकवासी, तेरापंथ और दिगम्बर मत के विद्वान उपस्थित रहे और जैनेतर विद्वानों की उपस्थिति भी विशेष ध्यान

आकर्षित करने वाली थी। अतः यह संगोष्ठी किसी एक पक्ष या सम्प्रदाय की न होकर व्यापक रूप से विद्वानों की निष्पक्ष संगोष्ठी थी।

प्राकृत भाषा और साहित्य को केन्द्र में रखकर सभी विद्वानों के शोध-प्रबन्धों का सार यह था कि—१. भगवान् महावीर की भाषा अर्धमागधी थी। २. शौरसेनी से अर्धमागधी भाषा प्राचीन है। ३. जैन आगमों की भाषा अर्धमागधी ही है। ४. शौरसेनी भाषा में आगम साहित्य नहीं है ऐसा नहीं है परन्तु वह अर्धमागधी आगमों की अपेक्षा परवर्ती काल का है, प्राचीन नहीं है।

संगोष्ठी के श्रोतागण एवं सक्रिय भाग लेने वालों में विख्यात साहित्यकार प्रो० जयन्त कोठारी, सी० वी० रावल, गोवर्धन शर्मा, मकूलचन्द शाह, नीतिन देसाई, वी० एम० दोसी, विनोद मेहता, वसन्त भट्ट, विजय पंड्या, कनुभाई शेठ, ललित भाई, निरंजना वोरा, जागृति पंड्या, गीता मेहता तथा अन्य क्षेत्रों के विद्वानों की उपस्थिति बहुत ही संतोषप्रद रही।

संगोष्ठी का विषय जटिल तथा शुष्क होते हुए भी वातावरण रूखा-सूखा न बन जाय उसके लिए डॉ० मधुसूदन ढांकी और डॉ० एस० आर० बनर्जी जैसे प्रतिभावंत विद्वानों ने अपने सेन्स ऑफ ह्यूमर से उसे रसप्रद बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया यह एक विरल घटना थी।

संगोष्ठी के समापन के प्रसंग पर आचार्य श्री शीलचन्द्रसूरिजी ने मार्मिक और संवेदनशील शब्दों में कहा कि—

अपन लोग अनेक विवादों को लेकर बैठे हैं, उनसे अभी तक थके नहीं और भाषा के नाम से चली आ रही एकता को नष्ट करने का यह नया विवाद खड़ा किया गया है। यह विवाद किस लिए? क्या किसी की अस्मिता-गौरव समाप्त करने का हेतु इसके पीछे जुड़ा हुआ है? किसी का भी यदि ऐसा हेतु होगा तो वह कभी भी सफल नहीं होगा। बात-बात में अनेकान्तवाद की दुहाई देने वाले मित्रों को सम्बोधन करते हुए उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि—बन्दूक में से गोली छोड़ने वाले को सभी छूट और फिर बचाव करने वाले के लिये अनेकान्त का पालन करना अनिवार्य—ऐसे अनेकांत में हमको विश्वास नहीं है, "मारना भी और न भी मारना" ऐसे 'भी' सिद्धांत को अनेकांत नहीं कहा जा सकता। वहाँ पर तो 'न ही मारना' ऐसा ही सिद्धान्त स्वीकारना पड़ता है। परम्परा से दोनों ही सम्प्रदाय के प्राचीन और आधुनिक विद्वानों ने जो भाषा स्वीकार कर मान्य रखी है उसका विच्छेदन करना और नयी ही काल्पनिक बात की अनेकांत के नाम से पुष्टि करना—यह किसी भी प्रकार से उपयुक्त नहीं है। विशेष तौर पर उन्होंने यह भी कहा कि कितने विद्वान-मित्र

"नरो वा कुंजरो वा" के सिद्धान्त में मानते हैं। इधर आये तो इधर भी 'हाँ' और उधर जाये तो उधर भी 'हाँ'। ऐसी पद्धति उन्हें भले ही विद्वान बनाती हो परन्तु वास्तविक रूप में एकेडेमिक व्यक्ति की कोटि में उनकी गिनती हो नहीं सकती। उनकी श्रद्धेयता स्वीकारने योग्य नहीं रहती। ऐसे मित्रों को मेरी सौहार्दपूर्ण सलाह है कि उनको शौरसेनी का पक्ष उचित लगे तो वही पक्ष स्वीकार करना चाहिए परन्तु दुहरी नीति का आश्रय लेने का आग्रह न रखें।

अंत में अध्यक्ष श्री के उपसंहार के साथ संगोष्ठी का समापन सुखद और संवादी वातावरण में पूरा हुआ।

इस संगोष्ठी के आयोजन में डॉ० के० आर० चन्द्र और डॉ० जितेन्द्र बी० शाह ने महत्वपूर्ण भाग अदा किया। दोनों दिन भोजन की व्यवस्था का प्रबन्ध श्री वक्तावरमलजी बालर, वंसराजजी भंसाली और नारायणचन्दजी मेहता ने किया था और निवासादि का प्रबन्ध सेठ हठीसिंह केसरीसिंह वाडी के ट्रस्ट ने किया था।

[**टिप्पणी**—डॉ० जगदीशचन्द्र जैन ने अपने 'प्राकृत साहित्य के इतिहास' में स्पष्टतापूर्वक कहा है कि जैन (अर्धमागधी) आगमों का काल ई० स० पूर्व पांचवीं शताब्दी से प्रारम्भ होता है जबकि दिगम्बर सम्प्रदाय के (शौरसेनी) साहित्य का प्रारंभ ई० स० प्रथम शताब्दी से होता है। डॉ० के० आर नोर्मन लंडन का पत्र भी यही कहता है कि जिनागमों की मूल भाषा अर्धमागधी ही थी और शौरसेनी आगम साहित्य का समय परवर्ती है।]

जैन भवन प्रकाशन

हिन्दी

१.	अतिमुक्त (२य संस्करण)—श्री गणेश ललवानी अनु : श्रीमती राजकुमारी बेगानी	४०.००
२.	श्रमण संस्कृति की कविता—श्री गणेश ललवानी अनु : श्रीमती राजकुमारी बेगानी	२०.००
३.	नीलांजना—श्री गणेश ललवानी अनु : श्रीमती राजकुमारी बेगानी	३०.००
४.	चन्दन मूर्ति—श्री गणेश ललवानी अनु : श्रीमती राजकुमारी बेगानी	५०.००
५.	वर्द्धमान महावीर—श्री गणेश ललवानी	६०.००
६.	पंचदशी—श्री गणेश ललवानी	१००.००
७.	यादों के आईने में—श्रीमती राजकुमारी बेगानी	३०.००
८.	बरसात की एक रात—श्री गणेश ललवानी	४५.००

বাংলা

১.	অতিমুক্ত	—শ্রীগণেশ লালওয়ানী	৪০.০০
২.	শ্রমণ সংস্কৃতির কবিতা	—শ্রীগণেশ লালওয়ানী	২০.০০
৩.	ভগবান মহাবীর ও জৈন ধর্ম	—শ্রীপূরণচাঁদ শ্যামসুখা	১৫.০০

English

1.	Bhagavati Sutra (Text with English Translation) —Sri K. C. Lalwani	
	Vol. I (Satak 1-2)	150.00
	Vol. II (Satak 3-6)	150.00
	Vol. III (Satak 7-8)	150.00
	Vol. IV (Satak 9-11)	150.00
2.	The Temples of Satrunjaya —James Burgess	100.00
3.	Essence of Jainism—Sri P. C. Samsukha tr. by Sri Ganesh Lalwani	10.00
4.	Thus Sayeth our Lord—Sri Ganesh Lalwani	10.00

पी-२५, कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता-७००००७

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box 16127 Cal-700 017
Phone : (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax : (033) 2400098, 2471833

SURANA MOTORS PVT. LTD.
24A, Shakespeare Sarani, 84, Parijat, 8th floor
Calcutta-700071 Phone : 2477450/5264

M/s. J. KUTHARI PVT. LTD.
12, India Exchange Place, Calcutta-1
Phone : 220-3142, Resi. 475-0995

PARK PLACE HOTEL
SINGHI VILLA, 49/2, Gariahat Road,
Calcutta-700019 Phone : 475-9991/9992/7632

M/s. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Calcutta-700016
Phone : 292418 Resi. 464-2783

M/s. D. SANDEEP & CO.
78, J. S. S. Road, Ratna Deep,
Opera House, Mumbai

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road, B-3/5, Gillander House
Calcutta-700001
Ph. : (O) 220-8105/2139 (R) 244-0629/0319

NAHAR
5/1, A. J. C. Bose Road, Calcutta-700 020
Phone : 2476874 Resi 2443810

P. C. JAIN
B-14, Sarvodaya Nagar, Kanpur-208005
Phone : 29-5552/5955

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No. 4
Calcutta-700071 Ph : 296256/8730/1029
Resi. : 2476526/6638/240526
Telex : 0212333 ARBI IN Fax : 0091-33290 174

JAYANTI LAL & CO.
20, Armenian Street, Calcutta-700001
Phone : 25-7927/6734/3816 Resi. : 400440

HARAKH CHAND NAHATA
21, Anand Lok, New Delhi-110049
Phone : 6461075

RAJIV LALWANI
12, Duff Street, Calcutta
Phone : 2556705

G. M. SINGHVI
M/s. WILLARD INDIA LIMITED
Mcleod House
13, Netaji Subhas Road, Calcutta-700 001
Phone : 248-7476-8 (O) 475-4851/1483 (R)
Fax : 248-8184

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road, Calcutta-20
Phone : Resi. 455-3586

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Calcutta-700017
Phone : 242-5234/0329

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Calcutta-700071
Phone : 2428181

PARSAN BROTHERS
Diplomatic & bonded Stores Suppliers
18-B, Sukeas Lane, Calcutta-1
Phone : 242-3870 Office Fax : 242-8621

ABHAY CHAND BOTHRA
Phone : Resi. 298-4729/298755

C. H. Spinning & Weaving Mills Pvt. Ltd.
Bothra Ka Chowk
Gangasahar, Bikaner

APRAJITA BOYD
9/10, Sitanath Bose Lane, Salkia, Howrah-711106
Phone : 6653666, 6652272

B. W. M. INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi-221401 (U.P.)
Phone : Office 05414-25178, 25778, 25779
Bikaner Phone : 0151-522404, 25973
Fax : 05414-25378 (U.P.) 0151-61256 (Bikaner)

SUDEEP KUMAR SINGH DUDHORIA
Phone : Off. 252565/6315 Resi. : 4753133

A-D. ELECTRO STEEL CO. (PVT.) LTD.
Mfrs of Carbon Steel, Cast Steel, M. V. Steel &
all sort Alloy Steel Casting as per specification
Baltikuri (Surkhimill) Kalitala, Howrah
Office : 2203889/0714 Works · 6670485/2164
Resi. : 471-8393 Fax : 91-33-6672164

UJJWAL TRADING PVT. LTD.
Regd. Office : 11, Clive Row,
3rd Floor, Room No. 14, Calcutta-700001
Phone : Off. 242-4131/4756

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd floor,
Calcutta-700 007 India
Phone : 91-33-230 1329, 2321033
Fax : 91-33-230 2413

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Calcutta-700068
Phone : 4720610

VIJAY KUMAR BHANDAWAT
20/1, Maharshi Devendra Road
5th Floor, Calcutta-7
Phone : 239-6823, 25-0623

GRAPHITE INDIA LIMITED
Pioneers in Carbon/Graphite Industry
31, Chowringhee Road, Calcutta-700 016
Phone : 2264943, 292194 Fax : (033) 2457390

KUSUM CHANACHUR
Prop· **CHURORIA BROTHERS**
Mfg. by—K. E. C. Food Product
P. O. Azimganj, Dist. Murshidabad
Phone: STD 03483-53234
Cal—230-0432, 231-2802

ARIHANT ELECTRIC CO.
Manufacturer of Electric Cables
21, Rabindra Sarani, Calcutta-700007
Phone : 255668

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Calcutta-700 001, India
Phone (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable : SWADHARMI Fax : (033) 220975
Resi. : 464-3235/1541 Fax : (033) 4640547

NIRMALA BOTHRA
7/1/A, Nafar Kundu Road, Calcutta-700026
Phone : 475-5503

REENA MAHENDRA BHANDARI
13, Sahakar, 'B' Road, Church Gate, Bombay-20
Phone : 285-4970 Resi.
285-3762/65, 204-1792 Office

PRITAM ELECT. & ELECTRONICS P. LTD.
22, Rabindra Sarani, Shop No. G-136
Calcutta-700073 Tel. (033) 262210

पर्युषण पर्वपर आपके प्रिय जनों के लिए एक शानदार उपहार !

दुनिया में पहली बार

णमोकार मंत्र बोलनेवाली अलार्म घडियाँ

शेट्रा

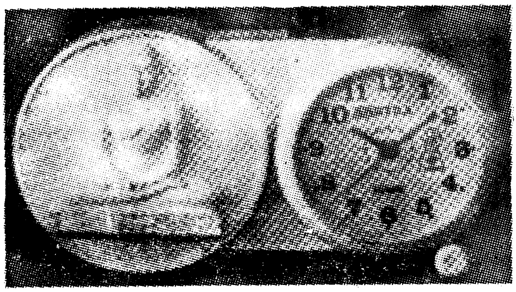

विशेषताएँ : १) आकर्षक एक्सपोर्ट मॉडेल। २) श्लोक या मंत्र की आवाज अत्यंत सुमधुर और स्पष्ट है। ३) अलार्म होते ही श्लोक या मंत्र का उच्चारण लगातार ४५ मिनट होगा। ४) यदि आप बीच में ही बंद करना चाहते है तो कर सकते है। ५) सफेद और सँडबिच यह दो आकर्षक रंगो में उपलब्द है। ६) यह घडी तीन पेन्सिल बॅटरी सेल पर चलती है। ७) उच्चतम तकनीक के कारण सतत उपयोग से भी इसकी सुमधुर ध्वनी अनेक बरसोंतक जैसे के वैसे ही रहेगी। ८) हर पूर्जे की खराबी के लिए एक वर्ष की गारंटी दी गई है। ९) इस घडी की कल्पना दुनिया में सबसे पहली बार साकार की है।

निर्माता - **शेट्रा टाईम्स (प्रा.) लिमिटेड**, दादर (पूर्व) मुंबई - ४०० ०१४

फोन ४१५६००१, ४१५६००२, ४१४५७८७ फॅक्स : ०२२ - ४१५६१५४, ४१४०९१४

वितरक : ● एशियन मार्केटिंग, मुंबई - ३ फोन : (०२२) ३४१४९४६ ● ताडदेव एम्पोरियम, मुंबई - ७, फोन : (०२२) ३०९९३६१ ● गांधी वॉच कंपनी, पुणे - २, फोन : (०२१२) ४५८८४९ ● पद्मावती सेल्स कार्पोरिशन अहमदाबाद - १, फोन : (०७९) २१११२५३ ● मोरबी क्लॉक कंपनी, सूरत - ३, फोन : (०२६१) ४२६६१५ ● ईस्टर्न टाईम एजन्सीज, कलकत्ता-१, फोन : (०३३) २२५४५१५, २२५४८९० ● वॉच ॲन्ड क्लॉक एजन्सीज, चेन्नई - १, फोन : (०४४) ५८१६२९, ५८३७१९ ● टाईम पॉईंट, दिल्ली - ३४, फोन : (०११) ७२२९५००१ ७२१९५०१ ● हितेश क्लॉक एजन्सीज, बंगलोर - ५३, फोन : (०८०) २२५७१६६ ● बॉम्बे वॉच कंपनी, इंदौर-७, फोन : (०७३१) ४३००३५, ५६४२६३ ● शंकर वॉच ॲन्ड रेडिओ हाऊस, भोपाल-१, फोन · (०७५५) ५४२७८३ ● नागपूरवाला वॉच कं. वर्धा - १, फोन : (०७१५२) ४०१०७

(महावीर या गोमटेशजी के अलावा श्लोक और मंत्र बोलनेवाली अलार्म घडियाँ गणेश, राम-सीता, श्रीकृष्ण, शिव, साई, गुरुनानक, मंगलमूर्ति गणेश, आयप्पा, मुरगा, गुरुवायुराप्पा, कालीमाता, दुर्गामाता, बालाजी, राघवेंद्र, स्वामी नारायण, अजान और चर्च प्रेअर (जीझस् क्राइस्ट्) की भी उपलब्ध हैं।)

सम्यग्दर्शन के बिना ज्ञान नहीं होता है।
ज्ञान के बिना चारित्र के गुण नहीं होते, गुणों के बिना मुक्ति नहीं होती
और मुक्ति बिना निर्वाण शाश्वत आत्मानन्द प्राप्त नहीं होता।

R. C. BOTHRA & COMPANY PVT. LTD.

Steams Agents, Handling Agents, Commission Agents
& Transport Contractors

Regd. Office :
2, CLIVE GHAT, STREET,
(N. C. Dutta Sarani)
6th Floor, Room No. 6
CALCUTTA-700 001
Phone : 220-6702, 220-6400
Fax : (91) (33) 220-9333
Telex : 21-7611 RAVI IN

Vizag Office : 28-2-47 Daspalla Centre
Vishakhapatnam-530020
Phone : 69208/63276
Fax : 91-0891-569326
Gram : BOTHRA

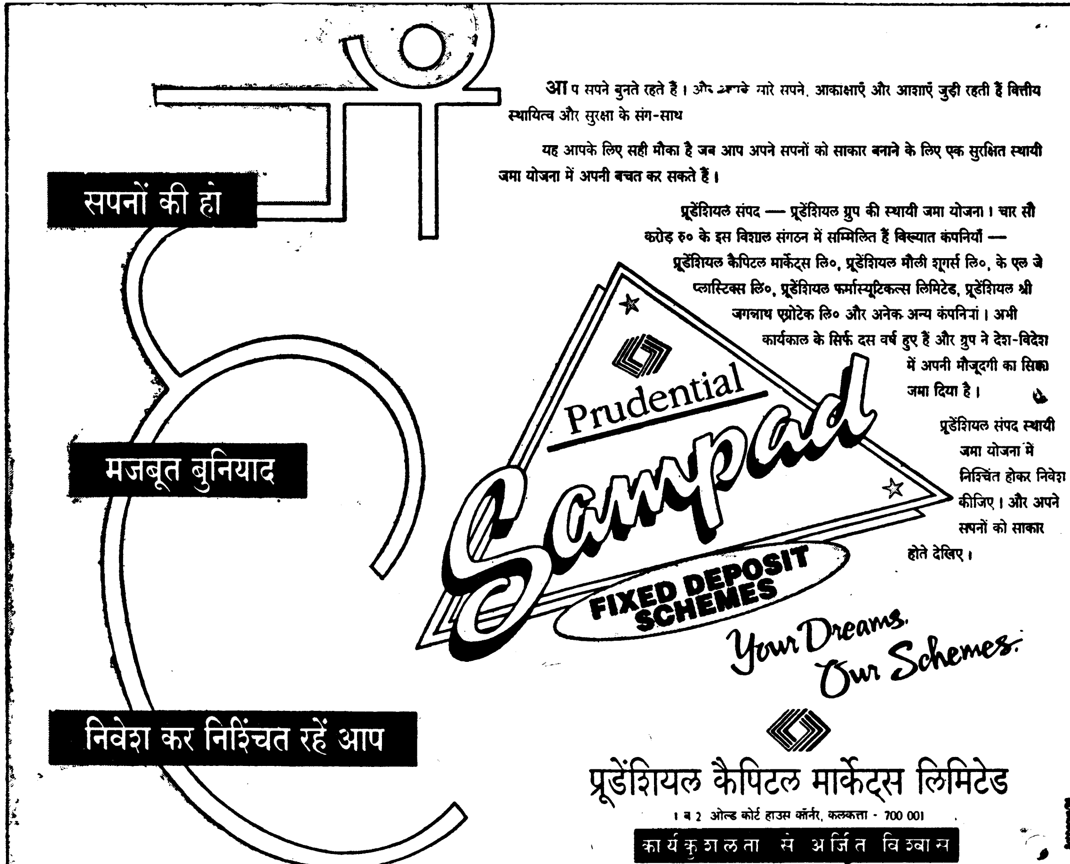
सपनों की हो
मजबूत बुनियाद
निवेश कर निश्चिंत रहें आप
आप सपने बुनते रहते हैं। और उनसे न्यारे सपने, आकाक्षाएँ और आशाएँ जुड़ी रहती हैं वित्तीय स्थायित्व और सुरक्षा के संग-साथ
यह आपके लिए सही मौका है जब आप अपने सपनों को साकार बनाने के लिए एक सुरक्षित स्थायी जमा योजना में अपनी बचत कर सकते हैं।
प्रूडेंशियल संपद — प्रूडेंशियल ग्रुप की स्थायी जमा योजना। चार सौ करोड़ रु० के इस विशाल संगठन में सम्मिलित हैं विख्यात कंपनियाँ — प्रूडेंशियल कैपिटल मार्केट्स लि०, प्रूडेंशियल मौली शूगर्स लि०, के एल जे प्लास्टिक्स लि०, प्रूडेंशियल फर्मास्यूटिकल्स लिमिटेड, प्रूडेंशियल श्री जगन्नाथ एग्रोटेक लि० और अनेक अन्य कंपनियां। अभी कार्यकाल के सिर्फ दस वर्ष हुए हैं और ग्रुप ने देश-विदेश में अपनी मौजूदगी का सिक्का जमा दिया है।
प्रूडेंशियल संपद स्थायी जमा योजना में निश्चिंत होकर निवेश कीजिए। और अपने सपनों को साकार होते देखिए।
Prudential
Sampad
FIXED DEPOSIT SCHEMES
Your Dreams. Our Schemes.
प्रूडेंशियल कैपिटल मार्केट्स लिमिटेड
1 व 2 ओल्ड कोर्ट हाउस कॉर्नर, कलकत्ता - 700 001
कार्यकुशलता से अर्जित विश्वास

WB/NC - 330

'Titth ayara'

Registered with the registered
of Newspapers for India under
No. R.N. 3018/77

Vol. XXI No. 11

February 1998

जिसने दुःख को समाप्त कर दिया है उसे मोह नही है, जिसने मोह को मिटा दिया है उसे तृष्णा नहीं है। जिसने तृष्णा का नाश कर दिया है उसके पास कुछभी परिग्रह नहीं है, वह अकिंचन है।

महावीर जयन्ती के शुभ अवसर पर उनका संदेश जन–जन तक पहुँचे इस शुभ कामना के साथ –

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666-7212/7225